सवालीराम

सवाल: पुरुषों के कुर्ते में बटन दाईं तरफ और महिलाओं के कुर्ते में बटन बाईं तरफ क्यों होते हैं?

संदर्भ के पिछले अंक में पूछे सवाल के लिए पाठकों की ओर से कुछ जवाब मिले हैं। वैसे तो मुद्दा पहनावे से सम्बन्धित है। जन सामान्य के कपड़ों में भी समय-समय पर बदलाव होते रहे हैं। जो पेंट-शर्ट, साड़ी, ब्लाउज़, सलवार, टी-शर्ट आदि आज सामान्य माने जाते हैं, हो सकता है 400 साल पहले मुगल काल में जन सामान्य द्वारा पहने ही न जाते हों। भारत में आदिम मानव काल से लेकर मौजूदा समय तक किस्म-किस्म के पहनावे और विविध सामग्री से बने वस्त्र दिखाई देते हैं। शायद इन पहनावों पर एक स्वतंत्र लेख हो सकता है।

यहाँ दो बिन्दुओं पर ध्यान दीजिए। पहला, जब कपड़ों को सिलवाए बिना पहनने का चलन था तब कपड़ों को शरीर पर लपेटा और बाँधा जाता था। उस समय लपेटने और गाँठ बाँधने के कई तरीके होते होंगे। दूसरा, जब कपड़ों को काट-छाँटकर कद-काठी के मुताबिक विविध पहनावों का चलन शुरू हुआ तो सिले गए कपड़ों पर डोरियाँ, काज-बटन आदि की शुरुआत हुई होगी। इन बटनों या डोरियों को मर्दों की ज़रूरतों, औरतों की ज़रूरतों, दाहिना हाथ प्रधान या बायाँ हाथ प्रधान को ध्यान में रखकर डिज़ाइन किया गया होगा, ऐसा यकीनी तौर पर नहीं कहा जा सकता।

यहाँ यह मानकर भी चल सकते हैं कि कुछ सवालों के कोई एक मतैण पुख्ता जवाब नहीं हो सकते। इसलिए जो भी तर्क लगाकर जवाब दिए जा रहे हैं, उनका आनन्द लेना चाहिए। बस, एक बात पर गौर कीजिए - क्या आपने किसी ऐसी रेडिमेड कपड़ों की दुकान या किसी टेलर मास्टर को देखा है जो आपसे पूछता हो कि "जनाब, दाहिना हाथ ज़्यादा इस्तेमाल करते हैं या बायाँ हाथ?" और फिर कपड़े दिखाता हो या सिलता हो?

खैर, हम हमारे पाठकों और हमारे सम्पादकीय सहयोगी की राय से आपको अवगत करवा रहे हैं।

जवाब 1: अधिकतर लोग दाहिने हाथ से काम करते हैं, इसी वजह से पुरुषों के कुर्ते में दाईं तरफ बटन लगे होते थे। और इसलिए भी चूँकि पुरुष स्वयं

कपड़े पहन लेते थे। जबकि महिलाओं के कपड़ों में बाईं तरफ बटन होते थे क्योंकि उन्हें दूसरी महिलाएँ कपड़े पहनाती थीं, इसलिए सामने से बटन लगाते वक्त बाईं ओर बटन का होना सही होता होगा।

दिलीप कुमार यादव
विकासखण्ड केसला, मप्र

सम्पादकीय टिप्पणी- *क्या सचमुच नौकरों की सुविधा का इतना खयाल रखा जाता होगा? उन नौकरों को तो कोई कपड़े नहीं पहनाता होगा और महिला नौकर के कपड़ों में भी बटन बाईं तरफ ही होते थे।*

जवाब 2: महिलाएँ अपने बच्चे को गोदी में आसानी-से लेने के लिए बाएँ हाथ का इस्तेमाल करती थीं/हैं, ऐसे में महिलाओं के कुर्ते में बटन बाईं तरफ लगा दिया गया ताकि वे अपने दाहिने हाथ से कुर्ते के बटन खोलकर बच्चे को फीड करा सकें।

राजा ठाकुर, एकलव्य, केसला, मप्र

सम्पादकीय टिप्पणी- *क्या लगता है, इतनी रिसर्च करके यह निर्णय लिया गया होगा?*

जवाब 3: चूँकि पुरुषों को महिलाओं से अधिक योग्य मना जाता है, जिस प्रकार शरीर का दायाँ अंग बड़ा और बायाँ अंग छोटा माना जाता है और दाएँ हाथ से शुभ काम किए जाते हैं तथा बाएँ हाथ से सभी अशुभ कार्य किए जाते हैं – बस यही कारण है कि पुरुषों के कुर्ते में दाईं तरफ बटन लगे होते हैं और महिलाओं के कपड़ों में बाईं तरफ बटन लगे होते हैं।

(सम्पादकीय टिप्पणी- *इस बात का बटन से क्या लेना-देना?)*

चूँकि शरीर के बाएँ हिस्से में हृदय होता है और महिलाओं की तुलना में पुरुषों को हार्ट अटैक ज़्यादा होता है, अतः उनके हृदय पर ज़्यादा भार न पड़े इसलिए भी पुरुषों के कुर्ते में दाईं तरफ बटन लगे होते हैं और महिलाओं के कपड़ों में बाईं तरफ बटन लगे होते हैं।

कल्पना शर्मा
मा. शि. मानगाँव
विकासखण्ड बाबई, मप्र

सम्पादकीय टिप्पणी- *तथ्य दरअसल उल्टा है। और वैसे भी बटन कहाँ लगे हैं, इससे हृदय पर भार का क्या सम्बन्ध है?*

जवाब 4: यदि हम भारतीय परम्परा को देखें तो आम तौर पर कुर्ता-पायजामा पुरुषों की पसन्दीदा वेषभूषा रही है। भारत में इसे पहले ज़्यादातर पुरुष ही

पहनते थे, अभी इसे महिला और पुरुष, दोनों पहनने लगे हैं।

खैर दोस्त, अब सवाल पर आते हैं कि पुरुषों के कुर्ते में बटन दाईं तरफ और महिलाओं के कुर्ते में बटन बाईं तरफ क्यों होते हैं?

इस सवाल का जवाब जानने के लिए हमें भारत से दूर इंग्लैंड की ओर जाना होगा।

इंग्लैंड के राज घरानों में रानी, महारानी आदि के शृंगार के लिए कुछ महिलाएँ हुआ करती थीं जिन्हें 'ड्रेसर्स' के नाम से जाना जाता था। भारत में भी ड्रेसर्स होती थीं पर उस दौर में भारत में रहने वाली महिलाएँ साड़ी या घाघरा-चोली पहना करती थीं।

अब आप थोड़ा याद कीजिए कि जब कोई लड़का कुर्ते के बटन लगाता है तो वह दाएँ हाथ का इस्तेमाल करता है क्योंकी अधिकतर लोग रोज़मर्रा के काम करने के लिए दाएँ हाथ का ही इस्तेमाल करते हैं। उसी तरह जो ड्रेसर्स होती थीं, उनकी सुविधा के लिए रानी-महारानियों के कपड़ों में बटन बाएँ हाथ की तरफ होते थे ताकि वे अपने दाएँ हाथ से उन बटन को बन्द कर पाएँ। तब से ही यह चलन चला आ रहा है।

निशा राजसिंह, भोपाल, मप्र

सम्पादकीय टिप्पणी- *ज़्यादा ही दूर की कौड़ी लगती है, नहीं? और जैसे पहली टिप्पणी में ज़िक्र किया है कि क्या सचमुच सहायकों/ड्रेसर्स का इतना खयाल रखकर यह तय हुआ होगा? और उन सहायकों के कपड़ों का क्या?*

जवाब 5: स्त्रियों को वाम कहा जाता है, पत्नि को वामांगिनी *(टिप्पणी- इस बात का बटन से क्या लेना-देना?)*। वाम का अर्थ बायाँ होता है। स्त्री और पुरुष की कमीज़ के अन्तर को बताने के लिए ही स्त्रियों की कमीज़ में बाईं तरफ बटन होते हैं।

हरीश गिधवानी, इन्दौर, मप्र

जवाब 6: सवाल दो खास कारणों से मज़ेदार है। पहला कारण तो यह है कि इसका जवाब किसी को पता नहीं। यानी यह उस तरह का सवाल नहीं है जैसे उल्लू को रात में दिखता है या नहीं।

इसी से जुड़ी दूसरी मज़ेदार बात है कि कोई ज्ञात कारण न होने के बावजूद पूरी नहीं तो भी लगभग पूरी दुनिया में यह परिपाटी व्याप्त है कि लड़के-लड़कियों के कुर्ते (और शायद पतलून) के बटन किस ओर लगाए जाएँगे। और तो और, बटन की जगह ज़िप का इस्तेमाल शुरू होने के बाद भी यह परिपाटी

जारी है; यह किस रूप में नज़र आती है, इसका अवलोकन आप स्वयं करके बताएँ।

खैर, जवाब पर आते हैं।

इस सवाल के जवाब की हमें अटकलें ही लगानी होंगी। जब बात अटकल की है तो सबको सही या गलत होने का हक है। लेकिन जवाब गढ़ते हुए दो बातों का ध्यान रखना होगा। पहली बात यह है कि यदि किसी तथ्य का सहारा लिया जा रहा है, तो वह तथ्य सही होना चाहिए। जैसे यदि हम यह कहें कि 'महिलाओं की तुलना में पुरुषों को हार्ट अटैक ज़्यादा आता है' तो जाँच करनी होगी कि क्या तथ्यात्मक रूप से यह बात सही है (शायद नहीं है)।

दूसरी बात यह है कि कोई अटकल कितनी तर्कसंगत लगती है और क्या किसी अन्य सन्दर्भ में उसका कोई प्रमाण मिलता है। जैसे यदि स्तनपान को आसान बनाने के लिए बटन की स्थिति तय की गई थी तो क्या यह बात मानने योग्य है कि उस ज़माने (14वीं-15वीं सदी) के दर्ज़ी इतना अनुसंधान करते होंगे? और एक सवाल यह उठता है कि क्या यह सुविधा इतनी अधिक थी कि दर्ज़ियों को (पूरी दुनिया के दर्ज़ियों को) ऐसा करना सिखाया गया?

बात शायद सिर्फ इतनी हो कि बटन के आविष्कार के बाद स्त्री-पुरुष की पोशाकें एक-सी होने लगी थीं। विपरीत दिशा में बटन लगाना शायद उनमें अन्तर करने के लिए किया गया हो और इसमें इससे अधिक गहरी कोई बात न रही हो।

खैर, जैसे भी हो, यह सवाल है मज़ेदार और इस पर खोजबीन करते रहने से न सिर्फ मज़ा आएगा (शायद जवाब भी मिल जाए), बल्कि यह हमें पोशाक जैसी साधारण-सी चीज़ों में जेंडर-आधारित अन्तरों को देखने को प्रेरित करेगी।

सुशील जोशी
सम्पादक, स्रोत फीचर्स, एकलव्य
उज्जैन, मप्र

इस बार का सवाल:

समुद्र में आने वाले तूफानों का नामकरण कैसे किया जाता है?

शिक्षक, उत्क्रमित मध्य विद्यालय, हाजीपुर, बिहार

आप हमें अपने जवाब sandarbh@eklavya.in पर भेज सकते हैं।

प्रकाशित जवाब देने वाले शिक्षकों, विद्यार्थियों एवं अन्य को पुस्तकों का गिफ्ट वाउचर भेजा जाएगा जिससे वे पिटाराकार्ट से अपनी मनपसन्द किताबें खरीद सकते हैं।